B.A. (Hon's & Sub.) Part-I ①
Paper-I
GENERAL PSYCHOLOGY
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt. of Psychology
D. K. College, Dumraon
(Buxar)
V K S U. Ara, Bhojpur
(Bihar)

प्रत्यक्षीकरण (PERCEPTION)

मनोविज्ञान व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं का सही अध्ययन बहुत हद तक प्रत्यक्षीकरण पर भी निर्भर करता है। इस लिहाज से प्रत्यक्षीकरण के अध्ययन को मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त हो जाता है। साधारण अर्थ में किसी उत्तेजना का सही एवं ~~तत्काल~~ अर्थपूर्ण ज्ञान को प्रत्यक्षीकरण कहा जा सकता है। प्रत्यक्षीकरण को मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। उन परिभाषाओं के पचड़े में न पड़कर यहाँ एक ऐसी परिभाषा दी जा रही है जो Perception के स्वरूप पर अधिक-से अधिक प्रकाश डालता है:-

"प्रत्यक्षीकरण एक जटिल संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी उद्दीपन का तात्कालिक ज्ञान होता है।"

"Perception is a complex cognitive mental process through which we have immediate knowledge of present stimulus."

उपर्युक्त परिभाषा का विश्लेषणात्मक व्याख्या करने पर प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। प्रत्यक्षीकरण में मूलतः निम्नलिखित बातें पाई जाती हैं।:-

(1.) प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है।

(2.) यह एक संज्ञानात्मक (Cognitive) मानसिक प्रक्रिया है।

(3.) प्रत्यक्षीकरण के लिए किसी उद्दीपन का होना आवश्यक है। यानी जबतक कोई उद्दीपन व्यक्ति के समक्ष नहीं होगा तब तक प्रत्यक्षीकरण नहीं होगा।

(4) प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपन का तात्कालिक ज्ञान होता है। अर्थात किसी उपस्थित उद्दीपन का ज्ञान हमें तुरंत होता है। इसी अर्थ में Morgan King and Robinson (1981) ने कहा है:-

"व्यक्तियों द्वारा किया गया तात्कालिक अनुभव ही प्रत्यक्षीकरण है।"

(5) प्रत्यक्षीकरण चयनात्मक स्वरूप की मानसिक प्रक्रिया है। इसका मतलब यह है कि हमारे समक्ष उपस्थित अनेक उत्तेजनाओं में से किसी खास उत्तेजना पर ही हमारा ध्यान जाता है। फलतः हम उसका ही प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

'प्रत्यक्षीकरण के वैयक्तिक एवं सामाजिक तत्वों या कारक'

जब हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ किसी उत्तेजना के सम्पर्क में आती हैं तो प्रत्यक्षीकरण होता है। इसमें वैयक्तिक एवं सामाजिक तत्वों का बड़ा ही महत्वपूर्ण भूमिका होता है। किसी उत्तेजना के अर्थपूर्ण ज्ञान देने में इन दोनों ही कारकों का निर्णयात्मक योगदान होता है। फलतः प्रत्यक्षीकरण में चयनात्मक हो जाता है।

Ⓐ वैयक्तिक तत्व:- प्रत्यक्षीकरण में व्यक्तिगत कारक अपना प्रभाव डालते हैं। इन्हें Functional factors भी कहा जाता है, जो निम्नलिखित हैं।:-

(1) **आवश्यकता (Need)**:- प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति विशेष की आवश्यकता या प्रेरक अपना प्रभाव डालते हैं। प्रायः यह

Scanned By Scanner Go

यह देखा जाता है कि भूखा व्यक्ति का ध्यान सहज ही भोजन की तरफ चला जाता है। इस संदर्भ में मोरिस, मरफी आदि कई मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन कर इसको स्वीकारा है। Osgood ने बड़ा ही सुन्दर उदाहरण दिया है "भूखा होने पर ~~4~~ 400 D को वह Food पढ़ता था।

(ii) व्यक्तिगत मूल्य :- व्यक्तिगत मूल्य भी प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करता है। प्रत्येक वस्तु का अलग-अलग मूल्य होता है। कोई चीज एक व्यक्ति के लिए अधिक मूल्यवान होता है तो दूसरे के लिए कम हो सकता है। इसमें वैयक्तिक भिन्नताएँ देखी जाती हैं धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक मूल्य प्रत्येक व्यक्ति की भिन्न भिन्न स्तर की होती है जिसके चलते प्रत्यक्षीकरण में वैयक्तिक भिन्नताएँ दिखाई पड़ती है। हिन्दुओं को गाय पवित्र लगती है उसकी पूजा करते हैं। माँ के रूप में देखते हैं पर दूसरे धर्मवाले भिन्न दृष्टिकोण रख सकते हैं। ब्रूनर एवं गुडमैन का प्रयोग काफी प्रचलित है। उन्होंने गरीब और ~~(iii)~~ धनी वर्ग के बच्चों को सिक्के दिखाकर उसका चित्र बनाने को कहा। गरीब बच्चे सिक्के के बड़े चित्र बनाए क्योंकि उनके लिए सिक्के अधिक मूल्यवान थे धनी बच्चों की तुलना में।

(iii) प्रत्याशात्मक सुरक्षा :- व्यक्ति उन वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण आसानी एवं सुगमता से कर लेता है जो सुखद होते हैं। उससे उस व्यक्ति विशेष को आनन्द एवं सुकून मिलते हैं। इसके विपरीत उन उत्तेजनाओं से बचना चाहता है जो दुखदायी होते हैं। मैक्गीनिज ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में पाया कि व्यक्ति जिस प्रकार के संवेग में रहता है उसका प्रत्यक्षीकरण जल्द कर लेता है। यदि कोई व्यक्ति भय के संवेग में रहता है तो उसे जरा सी आहट से भी डर जाता है और चोरी की आशंका होती है और छाया का प्रत्यक्षीकरण भी चोर के रूप में करता है।

Ⓑ सामाजिक तत्व :- सामाजिक वातावरण से प्राप्त अनुभव व्यक्ति की प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करता है।

Scanned By Scanner Go

प्रत्यक्षीकरण में सामाजिक मान्यताएँ, रूढ़िया, आदर्श आदि का प्रभाव पड़ता है। सामाजिक नियम, कायदे कानून, परम्पराएँ आदि प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करती है। आदिवासी बच्चे जंगली जानवरो का प्रत्यक्षीकरण आसानी से कर लेते है। इसपर संस्कृति, सामाजिक मनोवृत्ति, पूर्वाग्रह, प्रचलन का प्रभाव पड़ता है। कैम्पबेल (1954) ने अपने अध्ययन में प्रत्यक्षीकरण पर प्रजातीय पूर्वाग्रह का प्रभाव देखा।

उस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्यक्षीकरण पर वैयक्तिक एवं सामाजिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि संरचनात्मक प्रतिरूप समान रहने पर भी लोगों का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-भिन्न तरह का हो जाता है। इसीलिए क्रेच एवं क्रचफिल्ड ने कहा है:- "प्रत्यक्षीकरण पर संरचनात्मक एवं कार्यात्मक दोनों कारकों का प्रभाव पड़ता है।"

03.06.21

Scanned By Scanner Go